नत्वा गजाननं पूर्वं देवान् च पितरौ तथा ।
कुलदेवान् गुरून् चैव कुर्वे काव्यं मनोहरम् ।।१।।

हिन्दी –

पहले श्री गणेश जी आदि देवों को प्रणाम करके तथा अपने कुल देवताओं, गुरूजनों तथा माता – पिता को प्रणाम करके मैं इस मनोहर काव्य की रचना आरम्भ करता हूँ।

बघाटि –

पैले गणेशादि देवते खे माथा टेक रो तथा आपणे कुलदेवते गुरूजना अरो मा – बावा खे डाल कर रो आऊं एस सौणे काव्य रि रचना कर चाला।

वेदशास्त्रे यस्यैवाज्ञे आप्तानां वचनं तथा ।
आज्ञाकर्त्रे कृष्णाय प्रणमामि पुनः पुनः ।।२।।

हिन्दी –

वेद, शास्त्र और सत्यवक्ताओं के वचन जिसकी आज्ञा है उन आज्ञाकर्ता भगवान् कृष्ण को मैं बार – बार प्रणाम करता हूँ।

बघाटि –

वेद, शास्त्र और सच बोलणि आले रे वचन जसरि आज्ञा असो तीना आज्ञा करनि आले भगवान् कृष्णा खे आऊँ बार – बार माथा टेकू।

।। ॐ ।।

!! श्री गणेशाय: नमः !!

श्री कृष्णाज्ञाभिवन्दनम्
संस्कृतकाव्यम्

(हिन्दी व पहाड़ी – बघाटी अनुवादसहितं)

डॉ. लेखराम शर्मा

गाँव धाला, डा. देवठी – सपरून जिला सोलन (हि.प्र.) 173 211
फोन : 98050 – 17550

श्री कृष्णाज्ञाभिवन्दनम्
हिन्दी व पहाड़ी–बघाटी अनुवादसहितं
संस्कृतकाव्यम्

प्रथम संस्करणम्।

मेष सङ्क्रान्तिः
विक्रमसंवत् २०७६
(14 – 04 – 2019)

मूल्यम् : 360 रूप्यकाणि।

श्री हरिः इलैक्ट्रो कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स
दी माल रोड, सोलन (हि.प्र.) 173 212
दूरभाष : 01792 – 222228

सादरसमर्पणम्

नमो ताभ्यः जननीभ्यः याभिः विश्वस्य शान्तये ।
प्राणप्रियाः सुपुत्राः हि भारताय समर्पिताः ।।

कातरतां तु गत्वा श्री कृष्णमर्जुन उक्तवान् ।
ब्रूहि मां त्वां प्रपन्नाय मम धर्मं सनातनम् ।।९।।

हिन्दी -

(अपने सगे लोगों से लगाव के कारण) कायरता को प्राप्त होकर अर्जुन ने कृष्ण से कहा कि (शिष्य रूप से) अपनी शरण में आए हुए मुझको मेरा सनातन (नित्य) धर्म (कर्तव्य) बताओ।

बघाटी -

(आपणे सके आदमी साए लगावा रे कारण) कायरता खे प्राप्त ओए रो अर्जुने कृष्णा खे बोला जे (शिष्य रूपा साए) आपणी शरणा मॉंएं आए ओन्दे माखे मेरा सनातन (नित्य) धर्म (कर्तव्य) बताव।

धर्मं कथितवान् कृष्णः प्रेम्णा विनम्रमर्जुनम् ।
वेदानां साररूपं तं गीताममृतवर्षिणीम् ।।१०।।

हिन्दी -

(जगदगुरू) भगवान् कृष्ण ने विनम्र (महान् शिष्य) अर्जुन को प्रेमपूर्वक वेदों का साररूप धर्म अमृत (परमानन्द) बरसाने वाली गीता के रूप में बताया।

बघाटी -

(जगद्गुरू) भगवान कृष्णे विनम्र (महान् शिष्य) अर्जुना खे प्यारा साए वेदा रा सार रूप दर्म अमृत (परमानन्द) बरशावणि आली गीता रे रूपा मॉंएं बतावा।

यत्कृपया कृशः पङ्गुः लङ्घयते दुःसागरम् ।
तस्याज्ञया प्रसादाच्च विशामि काव्यसागरे ।।३।।

हिन्दी -

जिसकी कृपा से कमजोर दिव्याङ्ग भी कठिन संसार सागर को पार कर जाता है उसकी आज्ञा और कृपा से ही मैं अल्पज्ञ कवितासागर में प्रवेश कर रहा हूँ।

बघाटि -

जसरी कृपा साय कमजोर दिव्याङ्ग बि कठिन संसार सागर पार कर जाओ तेसरी आज्ञा अरो कृपा साय ही आऊँ अल्पज्ञ कवितासागरा मॉंएं प्रवेश कर चाला।

न मम साहसं कृष्ण ज्ञानबलं तथैव च ।
एकमेव ममाधीनं पूर्णमालम्बनं तव ।।४।।

हिन्दी -

हे कृष्ण! न तो मेरे पास साहस है और न ज्ञान का बल। केवल एक ही वस्तु जो मेरे अधीन है वह है आपका पूरा सहारा।

बघाटी -

हे कृष्ण! ना तो मां काय साहस आथि अरो ना ज्ञाना रा बल। बस एक ही चीज जो मां काय असो से असो त्हारा पूरा स्हारा।

निमित्तमर्जुनं कृत्वा दर्शयामि प्रयोजनम् ।
दुर्लभस्य मनुष्यस्य पृथिव्यां हि जन्मनः ।।५।।

हिन्दी -

अर्जुन को निमित्त बनाकर पृथ्वी पर मनुष्य के दुर्लभ जन्म का मैं यहाँ प्रयोजन दर्शा रहा हूँ।

बघाटी -

अर्जुना खे बहाना बणाय रो आऊँ धरती पाँएं आदमी रे दुर्लभ जन्मा रा प्रयोजन बतावणि लग रोआ।

विना युद्धं न दास्यामि भूमेरिहाल्प भागपि ।
दुर्योधने इत्युक्ते हि क्षेत्रे सर्वे योद्धुं समागताः ।।६।।

हिन्दी -

बिना युद्ध किए मैं भूमि का थोड़ा सा हिस्सा भी नहीं दूँगा, दुर्योधन के ऐसा कहने पर सभी योद्धा कुरूक्षेत्र के मैदान में युद्ध करने के लिए एकत्र हो गए।

बघाटी -

विना युद्ध कर रो मेरे जमीना रा थोड़ा जा हिस्सा बि नी देणा, दुर्योधना रे ईशा बोलनि पाँए कुरूक्षेत्रा माँएं लड़नि खे कट्ठे ओइ गोए।

सेनामुभयपक्षीयां द्रष्टुमीहे यदार्जुनः ।
कृष्णः मध्ये रथं नीत्वा सम्यग्द्रष्टुं तदोक्तवान् ।।७।।

हिन्दी -

जब दोनों ओर की सेनाओं को अर्जुन ने देखना चाहा तो भगवान् कृष्ण ने रथ को बीच में ले जाकर उसको अच्छी तरह से देखने के लिए कहा।

बघाटी -

जबे अर्जुने दोइ कनारे रि सेना देखणि चाइ तो भगवान् कृष्णे रथ बीचा माँएं खे नि रो तेसके अच्छी तरह साय देखणि खे बोला।

उभयोः सेनयोर्मध्ये दृष्ट्वा भीष्मादिकं जनम् ।
अर्जुनः करूणाविद्धो युद्धमकर्तुमुक्तवान् ।।८।।

हिन्दी -

दोनों सेनाओं के बीच में भीष्मपितामह आदि (अपने सगे) व्यक्तियों को देखकर अर्जुन ने दया से पीड़ित होकर कृष्ण से युद्ध न करने के लिए कहा।

बघाटी -

दोइ सेना रे बीचा माँएं भीष्म पितामह बगैरा (आपणे सगे) आदमी खे देख रो अर्जुने दया साए पीड़ित ओय रो कृष्णा खे युद्ध ना करनि खे बोला।

स्वधर्मं पालयि ष्यामि यत्क्षत्रियस्य वर्तते ।
स्वीकरोमि सुशिक्षां ते पूज्यस्य हि जगद्गुरोः ।।१७।।

हिन्दी –

क्षत्रियों का जो स्वधर्म (स्वाभविक कर्तव्य) है उसका मैं पालन करूँगा। मैं पूज्य आप जगद्गुरू (सर्वोच्च गुरू) की सुशिक्षा (सदुपदेश) को स्वीकार करता हूँ।

बघाटी –

मेरे (आपणे) क्षत्रिय रे स्वधर्मा (युद्धा) रा पालन करना। आऊँ तूमा सर्वोच्च पूज्य गुरू रा सदुपदेश मंजूर करू।

युद्धमहं करिष्यामि धर्ममयं प्रयत्नतः ।
भविता नैव पापस्तु उक्तमस्ति त्वया यथा ।।१८।।

हिन्दी –

मैं प्रयत्नपूर्वक इस धर्म (कर्तव्य) मय युद्ध को लड़ूँगा। इससे मुझे (कोई) पाप नहीं लगेगा, जैसा कि आपने (कृष्ण ने) कहा (सिद्ध किया) है।

विशेष : पाप तभी तक था जब तक युद्धकर्म को मैं अपना कर्म समझता था। मैं तो वास्तव में आप भगवान् का सेवक हूँ। भगवान् की सेवा में पाप कैसा?

बघाटी –

मेरे मिणति साय इ धर्म (फर्ज़) मय युद्ध लड़ना। एनी साए मावे (कोई) पाप नी लगणा, जीशा तूमे (कृष्णे) बोला या सिद्ध किया।

किं ममोक्तं श्रुतं पार्थ यत्किञ्च ज्ञापितं मया ।
कारूण्यं ज्ञानहीनं ते प्रणष्टमथवा न वा ।।११।।

हिन्दी –

(उपदेश के रूप में) जो कुछ मैंने (कृष्ण ने) बताया, क्या तुमने वह सुना? तुम्हारी अज्ञानतापूर्ण करूणा (दया) नष्ट हुई या नहीं?

बघाटी –

(उपदेशा रे रूपा माँएं) जो कें मोंएं (कृष्णे) बतावा, तोंएं से शूणा के नी? तेरि अज्ञानतापूर्ण करूणा (दया) नष्ट ओइ के नी?

व्याप्तोऽसि हेतुरूपेण किरणेषु जलं यथा ।
उद्धारार्थं हि जीवानां प्रमत्तो नैव जायसे ।।१२।।

हिन्दी –

हे कृष्ण! आप सूर्य की किरणों में जल की तरह समस्त जीवों में उनके कल्याण या भगवद्भाव की प्राप्ति के लिए व्याप्त हो रहे हैं। इस कार्य में आप कभी लापरवाही नहीं करते।

बघाटी –

हे कृष्ण! तूमे सुरजा री किरणा माँएं पाणी री तरह सभी जीवा माँएं तीना रे कल्याणा री खातर व्याप्त ओय रोए। एस कामा माँएं तूमे लापरवाहि नी करदे।

भवत्प्रोक्तं मया ध्यातं धृतं मनसि सर्वथा ।
कारूण्यमज्ञानजन्यं मूलतो मे गतं हि तत् ।।१३।।

हिन्दी –

आपका उपदेश मैंने ध्यान से सुना। उसको मैंने मन में धारण कर लिया है। अज्ञान से पैदा हुई मेरी दया अब जड़ से नष्ट हो गई है।

बघाटी –

त्हारा उपदेश मोंएं द्याना साय शुणा। से मोंएं आपणे मना माँएं दारण कर पाया। अज्ञाना साय पैदा ओइ दि मेरि दया एबे जड़ा दे नष्ट ओ गुइ।

त्वत्प्रसादात्स्मृतिर्लब्धा करिष्ये वचनं तव ।
नष्टो मे च यथा मोहः तत्सर्वं कृपया श्रृणु ।।१४।।

हिन्दी –

आप (कृष्ण) की कृपा (उपदेश) से मुझे (परमात्मरूप अपने हृदयस्थ जीवात्मा की) स्मृति (याद) आ गई है। (अब) मैं आपकी आज्ञा (मेरी शरण में आ जाओ) का पालन करूँगा। मेरा मोह (मैं अपने सगे सम्बन्धियों पर शस्त्र का प्रहार कैसे करूँगा?) जिस प्रकार से नष्ट हुआ वह सब कृपया मुझ (शिष्य) से सुनो।

बघाटी –

त्हारी (कृष्णा) री कृपा (उपदेशा) साए मारवे (परमात्मा रूप आपणे हृदय रे जीवात्मा रि) याद आय गुइ। (एबे) मेरे त्हारी आज्ञा (मेरी शरणा माँएं आव) रा पालन करना। मेरा मोह (आपणे सके रिश्तेदारा पाँएं दया) जीशा नष्ट ओआ से सब कृपा कर रो माँदे (शिष्य दे) शूणो।

शरीराणि ह्यनित्यानि नित्यस्य तु शरीरिणः ।
तस्माद्योत्स्ये यथाज्ञा ते कृष्णस्य परमात्मनः ।।१५।।

हिन्दी –

सदा रहने वाले आत्मा के शरीर सदा के लिए रहने वाले नहीं हैं इसलिए आप भगवान् कृष्ण की आज्ञा से मैं (कौरवों से) युद्ध करूँगा।

बघाटी –

सदा रौणि आली आत्मा रे शरीर सदा खे रौणि आले नी आथि, एते री बजा साए तूमा भगवाना कृष्णा री आज्ञा साए मेरे (कौरवा साए) युद्ध करना।

विशेष : मतलब युद्धकर्म मेरा कर्म नहीं है भगवान् का कर्म है और उसके लिए भगवान् का ही आदेश है।

वासुदेव इदं सर्वं ज्ञात्वा हर्षमुपागतः ।
गुणैः गुणास्तु युध्यन्ति न जीवात्मा जीवात्मभिः ।।१६।।

हिन्दी –

हम, आप और सब संसार यह भगवान् है, यह जानकर मैं प्रसन्न हूँ। सत्त्वादि प्रकृति के तीन गुण एक दूसरे से लड़ते हैं, जीवात्मा जीवात्मा के साथ नहीं लड़ते।

बघाटी –

हामे, तूमे और सब संसार भगवान् असो, ईशा जाण रो आऊँ खुश असू। सत्त्व आदि प्रकृति रे तीन गुण आपि माँएं लड़ो, जीवात्मा जीवात्मा साय नी लड़दे।

वस्तुभिः देवदत्तेन जीवामि यज्ञहेतवे ।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो नाहं चौर्यं करोमि हि ।।२५।।

हिन्दी –

मैं देवताओं द्वारा दी गई अन्नादि वस्तुओं से यज्ञ करने के लिए अपना जीवन जीता हूँ। उन देवताओं के द्वारा दी गई वस्तुओं को उनको भोग लगाए विना मैं उनकी दी गई वस्तुओं की चोरी नहीं करता।

विशेष – अन्नादि हर वस्तु प्रकृति (देवताओं) की है अतः इसको देवाज्ञा से (भोग लगाकर) लेना जरूरी है। देने वाले को ही पहले खाने का अधिकार है।

बघाटी –

आऊँ देवते री दीती दी नौज बगैरा चीजा साय जग करनि खे आपणा जीवन जीऊ। आऊँ तीना देवते री दीती दी चीजा तीना खे चड़ावणि दे बीना तीनी चीजा रि चोरि नी करदा।

कर्म कुर्वन् हि यज्ञार्थं निष्पापोऽस्मीह यादव ।
जीवामि सर्वजीवार्थं न तु स्वदेहकारणात् ।।२६।।

हिन्दी –

हे कृष्ण! यज्ञ करने के लिए अपना कर्तव्य करते हुए मैं पाप (बन्धन) से मुक्त हूँ। मैं (आपकी तरह) सब जीवों के कल्याण (भगवत्प्राप्ति) के लिए जीता हूँ न कि केवल अपने शरीर की सेवा के लिए।

बघाटी –

हे भगवान्! यज्ञ करनि री खातर आपणा कर्तव्य नबांवदे आऊँ (तूमा री तरह) सबी जीवा रे कल्याणा (भगवाना रि प्राप्ति) री खातर जीऊ ना कि बस आपणे शरीरा री खातर।

वेदोक्तगुणकार्येषु न जायते मतिर्मम ।
ब्रह्मणो वेदज्ञेयस्य करिष्ये वचनं तव ।।१९।।

हिन्दी –

वेदों में बताए गए (सत्त्वादि तीन) गुणों के सकाम कार्यों में मेरी मति (बुद्धि) नहीं है। वेदों द्वारा ज्ञेय (जानने योग्य या प्राप्य) आप परमात्मा (कृष्ण) की आज्ञा का मैं पालन करूँगा अर्थात् विध्वंसक कौरव पक्ष के विरूद्ध मैं युद्ध करूँगा।

विशेष : वास्तव में युद्धादि विविध कर्मों के कर्ता तो प्रकृति के सत्त्वादि तीन गुण हैं, मैं (जीवात्मा) अर्जुन नहीं।

बघाटी – वेदा माँएं बतावे दे सत्त्वादि तिं गुणा रे सकाम कर्मा माँएं मेरि मति (लगन) नीं आथि। वेदा साय जाणनि या पाणि जोगे तूमा परमात्मा (कृष्णा) री आज्ञा रा मेरे पालन करना या कौरवा साए युद्ध करना।

इन्द्रियसंयमः मेऽस्ति बुद्धिश्च निश्चयात्मिका ।
अहं निष्कामभावस्थः करिष्ये वचनं तव ।।२०।।

हिन्दी –

मैंने (आपके उपदेशानुसार) अपनी आँख आदि इन्द्रियों पर संयम पा लिया है और मेरी बुद्धि एक निश्चय (अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित) वाली हो गई है। मैं बिना किसी निजी (शारीरिक) स्वार्थ के आपकी आज्ञा (अपने युद्ध धर्म) का पालन करूँगा।

बघाटी – मोंएं त्हारे उपदेशा साय आपणी सबी इन्द्रिय पाँएं विजय (नियन्त्रण) पाय पा अरो मेरा ज्ञान एकी निश्चय (युद्ध) आला ओय गोआ। मेरे आपणे कसि स्वार्था दे बिना त्हारी आज्ञानुसार युद्धा रा कर्म करना।

इन्द्रियाणां चरन्तीनां न मनोऽनुविधीयते ।
न हरति मम प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ।।२१।।

हिन्दी –

मैं अपने अपने विषयों (वस्तुओं या विचारों) में विचरण करती हुई इन्द्रियों के पीछे अपने मन को नहीं भागने देता। ये मेरे ज्ञान को उस प्रकार नहीं भगाती जिस प्रकार हवा पानी में नाव को भगाती है।

विशेष – इन्द्रियों के विषयों या वस्तुओं में राग और द्वेष छिपे होते हैं जो मनरूपी लोहे के लिए चुम्बक का काम करते हैं।

बघाटी – आऊँ आपणे आपणे विषया पीछे दौड़नि आली इन्द्रिय रे पीछे आपणे मना खे नीं दौड़नि देंदा। इ मेरे ज्ञाना खे तिशे नीं बगांवदी जिशि पौण पाणी माँएं नावा खे बगाओ।

करिष्ये नियतं कर्म शास्त्रैरूक्तं यदेव हि ।
तेन उदरपूर्तिश्च स्थास्यति वचनं तव ।।२२।।

हिन्दी –

मैं आपकी आज्ञानुसार शास्त्रों द्वारा मेरे (क्षत्रिय या सैनिक के) लिए निर्धारित (युद्ध) कर्म ही करूँगा। उससे मेरा जीवन निर्वाह भी होगा और आपके आदेश का भी पालन होगा।

विशेष – निष्काम भाव से वेद-शास्त्रों द्वारा निर्धारित विविध कर्तव्य भगवान् की आज्ञाएं हैं। जो आदमी उनका पालन नहीं करते वे पाप, दोष या बन्धन के भागी हैं।

बघाटी –

मेरे त्हारी आज्ञानुसार शास्त्रा माँएं निर्धारित आपणा युद्धकर्म करना। तेनी साय मेरा जीवन निर्वाह बि ओणा अरो त्हारे आदेशा रा पालन बि ओणा।

कर्तव्यपालनं यज्ञः तेन विना हि बन्धनम् ।
युद्धयज्ञं करिष्यामि मुक्तसङ्गः दिवानिशम् ।।२३।।

हिन्दी –

(धर्म) कर्तव्य का पालन यज्ञ है। उसको किए बिना बन्धन (पाप) लगता है। मैं इस युद्ध रूप यज्ञ को (बिना मोह के दिन-रात) करूँगा।

बघाटी –

दर्म या कर्तव्यपालन यज्ञ असो। जे तेते न करी तो पाप लगो। मेरे आपणे पराए रे मोहा अरो लगावा दे बिना लगातार इ काम करना।

विशेष – व्यक्ति द्वारा अपना निर्धारित कर्तव्य करना भगवान् की सेवा है।

ब्रह्मणा रचनादौ हि रचितं कर्म पावनम् ।
येन देवाः हि तुष्यन्तु तोषयन्तु जनानपि ।।२४।।

हिन्दी –

सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना के समय मनुष्यों के लिए देवताओं के प्रति पवित्र कर्म (यज्ञ) की रचना की जिससे देवता सन्तुष्ट (प्रसन्न) हों और वे प्रसन्न हुए देवता मनुष्यों को अन्नादि देकर प्रसन्न कर सकें।

विशेष – यज्ञ हम मनुष्यों की ओर से हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले देवताओं के प्रति विनम्रतापूर्वक कृतज्ञताज्ञापन है।

बघाटी –

ब्रह्मा जीए संसारा रि रचना करदे बक्ता आदमी खे देवते रे प्रति पवित्र कर्मा यज्ञ रि रचना कि जनी साय देवते प्रसन्न ओ अरो से प्रसन्न देवते आदमी खे प्रसन्न कर सको।

अहं सर्वाणि कर्माणि त्वयि समर्प्य निर्मम: ।
निष्काम: सर्वथा भूत्वा योत्स्ये हि विगतज्वर: ।।३३।।

हिन्दी –

मैं अपने समस्त कर्मों को आपको समर्पण करके सर्वथा ममता और फल की इच्छा से रहित होकर विना किसी दु:ख के युद्धकर्म करूँगा।

विशेष – निष्काम भाव से आपकी आज्ञा (वर्णानुसार कर्म) का पालन करने से किसी भी मनुष्य को पाप नहीं लगता।

बघाटी – मेरे आपणे सब कर्म तूमा खे समर्पण कर रो सर्वथा ममता रो फला रि इच्छा छाड रो विना कसि कष्टा दे आपणा युद्धकर्म करना।

धर्मो में विगुण: श्रेष्ठ: परधर्मस्य पालनात् ।
स्वधर्मे मरणं श्रेय: परधर्मो हि भीतिकर: ।।३४।।

हिन्दी –

मेरा धर्म (युद्ध रूपी कर्तव्य) दूसरे के कर्तव्य का पालन करने से गुणहीन ही अच्छा है। अपने कर्तव्य का पालन करते हुए मरना भी अच्छा है। अपना कर्तव्य छोड़कर दूसरे का कर्तव्य करना भयकारी (भगवान् के भाव की प्राप्ति में बाधक) है।

विशेष – भगवान् के भाव की प्राप्ति में नित्य आनन्द है जबकि अन्य जीवों के भाव की प्राप्ति में केवल सुख का आभास है।

बघाटी – मेरा युद्धरूपी कर्तव्य रेके वर्णा रा कर्तव्य पालन करनि दे गुणहीन ही अच्छा असो। आपणे कर्तव्य रा पालन करदे मरना बि अच्छा असो। आपणा कर्तव्य छाड रो रेके वर्णा रा कर्तव्य करना भयदायक (भगवाना रे भावा रि प्राप्ति करावणि माँएं बाधक) असो।

श्री कृष्णाज्ञाभिवन्दनम्

करोषि कार्यमात्रं त्वं नाहं देव कदाचन ।
शान्तियुद्धादि सर्वं हि त्वयैव तु विधीयते ।।२७।।

हिन्दी –

हे देव! संसार के समस्त कार्य तुम्ही करते हो, मैं कभी नहीं करता। इस संसार के शान्ति और युद्धादि समस्त कर्म (बिना मोह के) तुम्ही तो करते हो।

विशेष – जो कर्म सर्वोच्च देवता भगवान् के लिए नहीं किए जाते उनमें आसक्ति, मोह, बन्धन और पाप होता है।

बघाटी –

हे देव! तूमे दुनिया रे सब काम करो, आऊँ कबे नी करदा। शान्ति अरो युद्ध आदि सारे काम (बिना मोहा दे) तूमे ई तो करो।

जीवा अन्नेन जायन्ते वर्षणेनान्नमेव च ।
यज्ञेन जायते वर्षा यज्ञश्चैव हि कर्मणा ।।२८।।

हिन्दी –

संसार के समस्त जीव अन्न (के माध्यम) से पैदा होते हैं और अन्न वर्षा से पैदा होता है। वर्षा यज्ञ (देवताओं की पूजा) से होती है और यज्ञ कर्म (कर्तव्य) करने से होता है।

वशेष – कर्तव्य व्यक्ति के स्वभाव पर आधारित है जोकि भगवान् के द्वारा रचित है और विश्व के लिए कल्याणकारी है।

बघाटी –

दुनिया रे सब जीव नजा री बाठि पैदा ओ अरो नौज बरखा साय पैदा ओ। बरखा जगा या देवते री पूजा साय ओ अरो जग आपणा कर्म (कर्तव्य) करनि साय ओ।

वेदात्तु जायते कर्म वेदश्च ब्रह्मणा भवः ।
तस्मात्सर्वस्थितं ब्रह्म नित्यं यज्ञे उपस्थितम् ।।२९।।

हिन्दी –

वेदों से कर्म (कर्तव्य) पैदा होता है और वेद परमात्मा से पैदा हुआ है। इसलिए समस्त जीवों में विराजमान परमात्मा सदा यज्ञ में विराजमान रहते हैं।

विशेष – यज्ञ, अन्न और जीव तीनों एक दूसरे पर निर्भर हैं।

बघाटी –

वेदा साय कर्म या कर्तव्य पैदा ओ अरो वेद परमात्मा दे पैदा ओय रोए। एनी साय समस्त जीवा माँएं रौणि आला परमात्मा हमेशा जगा माँएं विराजमान रौ।

यज्ञपरम्पराचक्रं नानुपालयतीह यः ।
पापीयानिन्द्रियासक्तः व्यर्थं कृष्ण स जीवति ।।३०।।

हिन्दी –

हे कृष्ण! इस संसार में यज्ञ परम्परा के इस पूर्वोक्त चक्र का जो पालन नहीं करता, इन्द्रियों के विषयों के मोह में पड़ा वह आदमी व्यर्थ का जीवन जीता है।

विशेष – यज्ञ का वास्तविक अर्थ येन केन प्रकारेण सभी जीवों की सेवा करना है पर शास्त्रोक्त विधि से।

बघाटी –

हे भगवान्! इयाँ दुनियाँ माँएं यज्ञपरम्परा रे एस चक्रा रा जो पालन नी करदा, इन्द्रिय रे विषया रे मोहा माँएं पड़ा दा से आदमि अर्थ (लक्ष्य) हीन जीवन जीओ। आदमी रे जीवना रा सर्वोच्च लक्ष्य भगवाना रे भावा रि प्राप्ति असो। भगवाना रा भाव असो जे सबी जीवा रा बला ओ।

कर्म चेत्त्वं त्यजेः देव लोकोऽपि तत्तथा त्यजेत् ।
नश्येदिदं जगत्सर्वं नाशकश्च भवान् भवेः ।।३१।।

हिन्दी –

भगवन्! अगर आप अपना कर्म करना छोड़ दें तो संसारी लोग भी आपका अनुसरण करते हुए अपना कर्म करना छोड़ देंगे। उससे सारा संसार नष्ट हो जाएगा और उस नाश के कारण आप हो जाएंगे।

विशेष – भगवान् निरन्तर बिना किसी स्वार्थ कामना के विश्व का कल्याण कर रहे हैं, मनुष्य का भी यही कर्तव्य बनता है ऐसी ही उनकी आज्ञा है।

बघाटी – जे तूमे आपणा कर्म करना छाड देले तो दुनिया रे आदमी रे बि तारि मीश कर रो आपणा आपणा काम करना छाड देणा। तेनी साय सारि दुनिया नष्ट ओय जाणि। तेस विनाशा रे कारण बि तूमे ओणे।

कर्मासक्तो यथा लोके कर्मरतो हि दृश्यते ।
अनासक्तस्तथैवाहं करिष्ये वचनं तव ।।३२।।

हिन्दी –

कर्म के प्रति मोह (मैं कर्ता हूँ) रखने वाला आदमी जिस तरह दुनिया में कर्म करता है मैं उसी तरह अपने कर्म के प्रति मोह न रखकर आपके आदेश का पालन (युद्ध) करूँगा।

विशेष – बिना स्वार्थ के वेदों की आज्ञा का पालन करना भगवान् की आज्ञा का पालन करना है।

बघाटी – आपणे कामा साय मोह राखणि आला आदमि जीशा दुनिया माँएं आपणा काम करो मेरे तीशा ई आपणे कामा साय मोह ना राख रो त्हारे आदेशा रा पालन (युद्ध) करना। आऊँ क्षत्रिय असू। माखे वेदा रि आज्ञा अरो त्हारि आज्ञा एक (युद्ध कर) इ असो।

तुभ्यं समर्प्य कर्माणि सङ्‌गं त्यक्त्वा करोति यः ।
लिप्यते नैव पापेन पद्मपत्रं जलेनिव ।।४१।।

हिन्दी –

अपने काम आपको सौंपकर तथा अपने काम के प्रति मोह (अपनेपन) को त्यागकर जो काम करता है उसको उसी तरह पाप नहीं लगता जिस तरह कमल के पत्ते को जल नहीं छूता है।

बघाटी –

आपणा काम तूमा खे सौंप रो अरो मोह (मेरापन) छाड रो जो काम किया जाओ तेनी रा तीशा ई पाप नी लगदा जीशा कमला रे पत्ते खे पाणी माँय बि पाणि नी छूँदा।

न कर्तृत्वं न कर्माणि जीवस्य सृजति प्रभुः ।
कर्मफलेन योगं च सर्वंजीवस्य दोषतः ।।४२।।

हिन्दी –

परमात्मा जीव (मनुष्य) के लिए न तो कर्तापन देते हैं और न कर्म देते हैं। न ही उसको कर्मफल के साथ जोड़ते हैं। यह सब मनुष्य के अपने दोष (अमर जीवात्मा के मोह में पड़ने से) होते हैं।

विशेष – चेतन जीवात्मा और अचेतन सांसारिक वस्तुओं के गुण – धर्म और स्वभाव आपस में मेल नहीं खाते। सांसारिक वस्तुओं से राग और द्वेष नित्य निर्मल जीवात्मा के लिए मलरूप हैं।

बघाटी – भगवान् आदमी खे ना तो कर्ता बणांवदा, ना कर्म बणांवदा। न से तेसके कर्मा रे फला साय जोड़दा। इ आपणि गलति (अमर जीवात्मा रा आपणे नश्वर शरीरा साय मोह करना) असो।

धूमेनाग्निर्यथा लोके दर्पणश्च मलावृतः ।
विवेको हि मनुष्याणां कामेन सर्वथा तथा ।।३५।।

हिन्दी –

संसार में जिस तरह धुएं से आग और मैल से शीशा ढक जाता हैं उसी प्रकार अपनी इच्छा करने से मनुष्य का विवेक (स्थायी और अस्थायी वस्तुओं में अन्तर करने की शक्ति) ढक जाता है।

बघाटी –

दुनिया माँएं जीशे दुएं साय आग अरो मौला साय शीशा डक जाओ तीशा आपणी कामना करनि साय आदमी रा विवेक (स्थायी अरो अस्थायी चीजा माँएं फरक करनि रि शक्ति) डक जाओ।

इन्द्रियाणि मनोबुद्धी उच्यन्ते कामनागृहम् ।
मुह्यन्ते हा जना एतैः नीचाः देहाभिमानिनः ।।३६।।

हिन्दी –

हमारी इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि कामनाओं के घर हैं। कष्टकर बात है कि नीच देहाभिमानी (शरीर को ही अपना सब कुछ मानने वाले) लोग इन इन्द्रियादि के द्वारा मोह (विषयों के अपनेपन) में पड़ जाते हैं।

विशेष – कामना या इच्छा की प्रेरणा शक्ति से कर्मफल के प्रति आसक्ति पैदा होती है और उससे जीवात्मा बन्धता है।

बघाटी – म्हारी इन्द्रिय, मन अरो बुद्धि कामना (इच्छा) रे गौर असो। इ दुःखा रि बात असो जे आपणे शरीरा खे ई सब ठेंव मानणि आले नीच देहाभिमानि आदमि ईना इन्द्रियादि रे द्वारा मोहा माँएं पड़ जाओ।

अजन्मापि जगत्स्वामिन् जीवानामीश्वरोऽपि सन् ।
प्रकृतिं स्वां वशीकृत्य संभवस्यात्मायया ।।३७।।

हिन्दी –

हे ईश्वर! आप जन्म रहित होने पर भी तथा समस्त जीवों के स्वामी होते हुए भी अपनी प्रकृति (प्रत्यक्ष संसार) को नियन्त्रित करके अपनी माया (विशेष शक्ति) से अवतार रूप में प्रकट होते हो।

विशेष – संसार में जब भगवान् को न मानने वाले स्वेच्छाचारियों की शक्ति अधिक बढ़ती है तब भगवान् प्रकट होते हैं।

बघाटी – हे स्वामी! तूमे जन्मरहित ओय रो तथा सभी प्राणी रे मालिक ओय रो बि आपणी प्रकृति खे नियन्त्रित कर रो आपणी माया साय अवतारा रे रूपा माँए प्रकट ओ।

सुरक्षायै स्वभक्तानां विनाशाय च पापिनाम् ।
धर्मसंस्थापनार्थं च यथाकालस्तु संभवेः ।।३८।।

हिन्दी –

अपने प्रेमियों की सुरक्षा करने के लिए, मोहग्रस्त पापियों का विनाश करने के लिए तथा संसार में धर्म (कर्तव्य परम्परा) की सही प्रकार से स्थापना करने के लिए आप यथोचित समय पर प्रकट होते हैं।

बघाटी –

आपणे प्रेमी रि सुरक्षा करनि खे, मोहवश पाप (हिंसादि) करनि आले रा विनाश करनि खे अरो कर्तव्यपरम्परा रि अच्छी तरह साय स्थापना करनि री खातर तूमे सही समय पाँएं अवतार रूपा माँएं प्रकट ओ।

वर्णधर्मास्त्वया सृष्टाः गुणकर्मविभागशः ।
न त्वां कर्माणि लिम्पन्ति अकर्ता तेन सर्वथा ।।३९।।

हिन्दी –

आपने गुणों और कर्मों को बान्टकर मनुष्यों के लिए वर्णधर्म की रचना की है। आप अपने (रचनादि कर्म) करते हुए भी उससे लिप्त (मोहित या आसक्त) नहीं होते, इसलिए उस कर्म को न करने वाले अकर्ता बने रहते हैं।

बघाटी –

तूमे सत्त्वादि गुण अरो कर्म बान्ड रो चौ वर्णा रि रचना कर राखि, इ काम कर रो बि तूमे एनी आपणा किया दा नी मानदे जनी साय तूमे कर्ता ओय रो बि अकर्ता बणे रौ।

यत् किञ्चापि स्वतः प्राप्तं संतुष्टः सर्वदा सुखी ।
सुखदुःखे समे कृत्वा मुक्तोऽस्मि पापबन्धनात् ।।४०।।

हिन्दी –

अपनी इच्छा के विना जो कुछ कर्मफल अपने आप प्राप्त हो जाए उससे मैं (अर्जुन) सदा सन्तुष्ट और सुखी रहता हूँ। सुख और दुःख को एक जैसा मानकर मैं (अब) पाप (परमात्मा द्वारा निर्धारित कर्तव्य को अपना मानना) से मुक्त हूँ।

बघाटी –

आपणा काम कर रो आपणि इच्छा किए बिना जो कुछ आफिए मिल जाओ तेनी साय आऊँ हमेशा सन्तुष्ट अरो सुखि रऊ। सुखा अरो दुःखा खे एकी जीशा मान रो एबे आऊँ पापा (भगवाना रा काम आपणा मानणा) दे मुक्त असू।

प्रकटः त्वं न सर्वस्य योगमायासमावृतः ।
अज्ञः जनः न जानाति दिव्यं त्वामजरामरम् ।।४९।।

हिन्दी - अपनी योगमाया में छिपे आप सभी लोगों के लिए प्रकट नहीं (कुछ लोग अवतार को नहीं समझ पाते) हो। आपको (आम आदमी की तरह जन्मने और मरने वाला समझने वाला) अज्ञानी आदमी आपके अजर (बूढ़ा न होने वाला) और अलौकिक अमर स्वरूप का अनुभव नहीं कर सकता।

विशेष - भगवान् की विशेष शक्ति का नाम योगमाया है। इसी शक्ति के कारण मनुष्य सांसारिक वस्तुओं में आसक्त और भगवान् से विमुख हो जाता है।

बघाटी - तूमे योगमाया साय लूके ओंदे सबी आदमि खे प्रकट नी ओंदे। तूमा खे आम आदमि री तरह जमणि मरनि आले समजणि आले अज्ञानि त्हारे अजर अरो अलौकिक अमर स्वरूपा खे नी देख सकदे।

रागद्वेषप्रभावेण द्वन्द्वमोहेन यादव ।
अज्ञाः जनास्तु मुह्यन्ति दीनाः जन्मनि जन्मनि ।।५०।।

हिन्दी - संसार में राग और द्वेष (सांसारिक नश्वर चीजों से लगाव और अलगाव की भावना) के प्रभाव से इस द्वन्द्व (राग - द्वेष) के प्रति मोहवश दीन (दयनीय) अज्ञानी लोग बार बार जन्म लेकर और मोहित होकर बन्धन में पड़ते हैं।

विशेष - राग - द्वेष से मुक्त आदमी की पहचान ही अलग होती है। वह विश्वकल्याणकारी भगवान् की आज्ञा का पालन करता है।

बघाटी - दुनिया माँएं दुनिया री चीजा साय लगावा अरो अलगावा री बावना रे प्रभावा री बजा साय राग - द्वेषा रे प्रति मोह राखणि साय दीन (दयनीय) अज्ञानि आदमि बार - बार मोहित ओंदे रौ और जन्म लय रो बन्धना माँएं पड़दे रौ।

यस्त्वां पश्यति सर्वत्र सर्वं च त्वायि पश्यति ।
सततं दृश्यसे तस्मै सः च त्वामेव पश्यति ।।४३।।

हिन्दी - भगवन्! जो आदमी आपको सारे संसार के जीवों में देखता है और सारे संसार के जीवों को आपके अन्दर (आपके सबसे बड़े शरीर) में देखता है उस आदमी को आप अपने से अलग नहीं करते और न वह आदमी आपको अपने से अलग करता है।

बघाटी - जो आदमि तूमा (भगवाना) खे सारी दुनिया रे जीवा माँएं देखो अरो दुनिया रे सबी जीवा खे त्हारे सबी दे बड़े शरीरा माँएं देखो तेसके तूमे आपि दे जूदे नी करदे अरो ना से तूमा खे आपि दे जूदे करदा।

गुणमयी हि मायेषा तवैवास्ति तु वस्तुतः ।
शरणं ये प्रपद्यन्ते तव मायां तरन्ति ते ।।४४।।

हिन्दी - यह तीन गुणों वाली माया (शक्ति) वास्तव में आपकी ही है। जो आदमी (त्रिगुणमयी माया की अपेक्षा) आपकी शरण (अपना सब कुछ आपको सौंपना) ग्रहण करते हैं वे आदमी (जीवात्माएं) आपकी माया (सांसारिक अपनापन और परायापन) को पार कर जाते हैं।

विशेष - परमात्मा माया के अधीन नहीं हैं, माया से सदा मुक्त हैं। परमात्मा की शरण लेने वाले भी परमात्मा की तरह उनके जैसे मुक्त स्वभाव वाले हो जाते हैं। यह नियम है।

बघाटी - इ त्रिगुणमयी माया शक्ति असली माँएं त्हारी ही असो। जो आदमि (जीवात्मा) इयां माया शक्ति री बजाए तूमा खे ही आपणा सब ठैंव सौंप देओ से त्हारी माया (गुणा) रे पैदा किए दे आपणे अरो पराएपणा दे कनारे खे निकल जाओ।

मायां ये शरणं यान्ति सदापहृतबुद्धय: ।
आसुरं भावमापन्ना: त्वां न यान्ति नराधमा: ।।४५।।

हिन्दी-जो लोग आप (भगवान्) की अपेक्षा आपकी माया (सत्त्वादि तीन गुणों) की शरण लेते हैं वे अपहृत बुद्धि (संसार के आकर्षणों से मोहित हुई) वाले आसुरी भाव को प्राप्त हुए अधम (नीच) लोग आप (भगवान्) को प्राप्त नहीं होते जो कि मनुष्य के जीवन का एकमात्र लक्ष्य है।

बघाटी- जीने तिं गुणा आली माया रि शरण लोइ तीना आदमी रि बुद्धि (ज्ञान) सांसारिक आकर्षणे चोर पाइ। से नीच आदमि आसुरी भावना खे प्राप्त ओए रो तूमा (भगवाना) खे प्राप्त नीं ओंदे जो म्हारे जिवणि रा चरम लक्ष्य असो।

प्राप्येह मानुषं जन्म ज्ञानेन शरणं व्रजेत् ।
वासुदेव इदं सर्वं ज्ञात्वा मुच्यते बन्धनात् ।।४६।।

हिन्दी-इस संसार में दुर्लभ मनुष्य के रूप में जन्म लेकर ज्ञान के द्वारा आप (भगवान्) की शरण लेनी चाहिए। यह सम्पूर्ण संसार (हर वस्तु) वासुदेव या परमात्मा है, ऐसा अनुभव प्राप्त करके मनुष्य बन्धन या पाप-पुण्य की मान्यता से मुक्त (भगवान् के भाव को) प्राप्त हो जाता है।

विशेष-माया (तीन गुण) भी वासुदेव है, यह अनुभव प्राप्त करके हमको केवल भगवान् की आज्ञा का पालन करना है। भगवान् की इच्छा ही हमारी इच्छा हो।

बघाटी-इयां दुनिया माँएं दुर्लभ आदमी रा जन्म लय रो ज्ञाना साय भगवाना रि शरण लणि चैं। इ सारि दुनिया (सारी चीजा) वासुदेव या परमात्मा असो, ईशा अनुभव प्राप्त कर रो आदमि बन्धना (पाप-पुण्य रि मान्यता) दे मुक्त ओय रो भगवाना री बावना खे प्राप्त ओय जाओ। मोक्ष, भगवाना रि प्राप्ति या परमानन्द एक ई बात असो।

कामै: स्वै: स्वै: हृतज्ञाना उपयान्त्यन्यदेवता: ।
तत्तन्नियममाश्रृत्य भुञ्जन्ते नश्वरं फलम् ।।४७।।

हिन्दी-

मनुष्य अपनी अपनी अलग-अलग इच्छाओं के द्वारा अपहृत ज्ञान (बुद्धि) के द्वारा आप (परमदेव भगवान्) के अतिरिक्त अन्य देवताओं का सहारा लेते हैं। उन अलग अलग देवताओं से सम्बन्धित अलग अलग पूजा नियमों को अपनाकर वे नष्ट होने वाले फलों को प्राप्त करते हैं।

विशेष- देवताओं के अन्दर आप भगवान् का अनुभव करना अनन्त फलदायक है।

बघाटी-

आदमि आपणी आपणी अलग अलग इच्छा रे द्वारा नष्ट ज्ञाना साए दूजे देवता रा आसरा लौ। तीना जूदे जूदे देवते साय जूड़े ओंदे जूदे जूदे पूजा नियम अपनाय रो से नष्ट ओणि आले फल प्राप्त करो।

जनस्येच्छानुसारं त्वं देवे प्रेम प्रवर्धसे ।
देवद्वारा फलं चैव तं त्वमेव प्रयच्छसि ।।४८।।

हिन्दी-

मनुष्य विशेष की इच्छानुसार आप विशेष देवता के प्रति उसका प्रेम बढ़ाते हैं और उस देवता के द्वारा उसको (इच्छित) फल भी तुम ही देते हो।

बघाटी-

आदमि री इच्छानुसार तूमे ई देवते रे प्रति तेसरा प्रेम बड़ाओ अरो तेस देवते रे द्वारा तेसके तेसरी इच्छानुसार फल बि तूमे (कृष्ण परमात्मा) ई देओ।

कृष्णमार्गात् गतप्राणाः प्रयान्ति नैव तत्परम् ।
चान्द्रज्योतिस्तु संप्राप्य निवर्तन्ते ते जन्मनि ।।५७।।

हिन्दी –

परमात्मा को न जानने वाले व्यक्ति प्राण त्यागने पर कृष्ण (दक्षियान) मार्ग से जाते हैं और वे भगवान् की समीपता को प्राप्त नहीं होते। वे चन्द्रमा की ज्योति को प्राप्त होते हैं।

बघाटी –

भगवाना खे ना जाणनि आले आदमि आपणे प्राण छाड रो कृष्ण या दक्षिणायन मार्गा खे प्राप्त नी ओदे। से चन्द्रमा री जोति खे प्राप्त ओय रो दबारा शरीर दारण करो।

प्रकृतिं तव भूतानि प्रयान्ति हि महाक्षये ।
कल्पादौ च पुनस्तानि रच्यन्ते ते पुनस्तया ।।५८।।

हिन्दी –

महाप्रलय होने पर प्राणी आपकी प्रकृति (भौतिक रूप) को प्राप्त होते हैं। कल्प का आरम्भ होने पर वे फिर से प्रकृति के द्वारा पैदा कर दिए जाते हैं।

बघाटी –

महाप्रलय ओणि पाँएं प्राणि तूमा री प्रकृति खे प्राप्त ओय जाओ। अरो कल्पा रा आरम्भ ओणि पाँएं दबारा प्रकृति रे द्वारा पैदा कर दिए जाओ।

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते शरीरकम् ।
तं तमैवेति देवेश सदा तद्भाव भावितः ।।५१।।

हिन्दी –

अपने जीवनान्त में आदमी जिस जिस भावना को याद करते हुए शरीर का त्याग करता है उसी भावना से जुड़े हुए शरीर के रूप में वह अगला जन्म लेता है।

विशेष – अंत में जैसी जिसकी भावना हो वैसी योनि में उसका जन्म होता है।

बघाटी –

आदमि जियां जियां बावना खे याद कर रो आपणे जीवना रे अन्ता माँएं शरीरा रा त्याग करो से तियां बावना रे अनुसार विशेष प्राणी रे रूपा माँएं जन्म लौ।

तस्माद्धि सर्वकालेषु त्वामेव हि स्मराम्यहम् ।
त्वय्यर्पित मनोबुद्धिः संप्राप्स्यामि गृहं तव ।।५२।।

हिन्दी –

इसलिए मैं हमेशा आपका ही स्मरण करता हूँ। मैं अपना मन और बुद्धि आपको समर्पित करते हुए आपके घर, धाम या समीपता को प्राप्त करूँगा।

विशेष – कृष्णधाम या ब्रह्मलोक सभी लोकों से ऊपर का लोक है।

बघाटी –

एनी री खातर आऊँ हमेशा त्हारा स्मरण करू। मेरे आपणा मन अरो बुद्धि तूमा खे समर्पित करदे त्हारा गौर (समीपता) प्राप्त करनि।

आब्रह्म सकलाः जीवाः आयान्ति च प्रयान्ति च ।
त्वां त्वेते प्राप्य लोकेश मुच्यन्ते जन्मचक्रतः ।।५३।।

हिन्दी –

(एक जीवाणु से लेकर) ब्रह्मा (सर्वोच्च जीव) तक समस्त प्राणी इस दुनिया में जन्म लेते हैं और मर जाते (आते और जाते) हैं। भगवन्! ये सभी जीव (मनुष्य जन्म में) आपको प्राप्त करके बार बार जन्म लेने के चक्कर से छूट जाते हैं।

विशेष – परमात्मा या कृष्ण की भावना दुनिया की सर्वोच्च भावना है, जिसके बीच में सारी दुनिया समाई है। सकाम उपासना से प्राप्त होने वाला सर्वोच्च पद ब्रह्मा का है।

बघाटी – रचनाकार ब्रह्मा तैं दुनिया रे सब जीव बार बार जाओ अरो मरो। पेरि तूमा खे प्राप्त करनि आले जीव बार बार जन्म लणि रे चक्रा दे छुट जाओ।

ब्रह्मणो हि दिनारम्भे जायन्ते स्वशरीरतः ।
तद्दिनान्ते च लीयन्ते सर्वे तत्रैव जीविनः ।।५४।।

हिन्दी –

ब्रह्मा जी के दिन का आरम्भ (सृष्टि) होने पर प्राणी प्रलय में प्रलीन हुए अपने शरीरों से पुनः पैदा हो जाते हैं और दिन का अन्त (प्रलय) होने पर पुनः वे सभी प्राणी प्रलीन (सूक्ष्मरूप) हो जाते हैं।

विशेष – प्रलयकाल में सभी जीव ब्रह्मा जी के सूक्ष्मशरीर में सूक्ष्मरूप में निवास करते हैं।

बघाटी – ब्रह्मा जी रि भल्ख ओणि पाँएं प्रलय माँएं सूक्ष्म ओए ओंदे सबी जीवा रे सूक्ष्म शरीर तैं दुनिया माँएं पैदा ओय जाओ अरो ब्याल आवणि पाँएं से सब शरीर सूक्ष्म रूप दारण कर लौ।

ब्रह्मणो सूक्ष्मदेहाद्धि भावोऽन्यो हि विलक्षणः ।
नश्यमानेषु जीवेषु न नश्यति कदाचन ।।५५।।

हिन्दी –

ब्रह्मा जी के सूक्ष्मशरीर से एक अन्य विलक्षण भाव (परमात्मा) है जो जीवों के शरीरों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता।

विशेष – ब्रह्मा जी अपने कर्मफलानुसार एक विशेषावधि तक ही अपने पद का फल भोगते हैं पर ब्रह्म या परमात्मा का पद अनन्तावधि के लिए है।

बघाटी –

ब्रह्मा जी रे सूक्ष्मशरीरा दे एक रेका नौरवा बाव (भगवान्) असो जो जीवा रे शरीरा रे नष्ट ओणि पाँएं बि नष्ट नी ओंदा।

अग्निमार्गात् गतप्राणाः यान्ति ब्रह्मविदो जनाः ।
क्रमशः पथि गच्छन्त अकामाः यान्ति तत्परम् ।।५६।।

हिन्दी –

ब्रह्म या परमात्मा को जानने वाले व्यक्ति प्राण त्यागने पर अग्नि (उत्तरायण) मार्ग से यात्रा करते हैं। वे क्रम से इस मार्ग को पार हुए उनमें से जो सर्वथा निष्काम होते हैं वे परमात्मा को प्राप्त होते हैं।

बघाटी –

भगवाना खे जाणनि आले आदमि शरीर छाड रो अग्निमार्गा या उत्तरायण मार्गा री बाठि जाओ। क्रमा साय बाटा री जांदे तीना माँएं जो सर्वथा निष्काम ओ से भगवाना खे प्राप्त ओय जाओ।

शरणं चैव गत्वा त्वां यः कश्चिदपि मानवः ।
त्वत्कृपया सदा याति सुदुर्लभां परां गतिम् ।।६५।।

हिन्दी –

आपकी शरण को प्राप्त हुआ कोई भी मनुष्य आपकी कृपा से हमेशा दुर्लभ उत्तम गति को प्राप्त होता है।

विशेष – शरण प्राप्ति का मतलब है भगवान् को याद करते हुए अपने कर्त्तव्य का पालन करना। इसी से जीवात्मा का कर्ताभाव रूप मल नष्ट होता है और वह कृष्णधाम को प्राप्त होता है। परमधाम को प्राप्त करवाना ही वेदों का प्रयोजन है।

बघाटी –

त्हारी शरणा खे प्राप्त ओआ ओंदा कोएं बि आदमि त्हारी कृपा साय दुर्लभ परमगति खे प्राप्त ओय जाओ।

त्वत्तो हि जायते विश्वं त्वमस्य मूलकारणम् ।
जानन्ति ये जना इत्थं ते तव शरणं गताः ।।६६।।

हिन्दी –

आपसे ही यह दुनिया पैदा होती है और आप ही इसके मूल कारण हैं। जो लोग इस बात को जानते हैं वे आपकी शरण को प्राप्त हो गए हैं।

विशेष – भगवान् के शरणागत प्रेमी का सर्वविध कल्याण सर्वथा सुनिश्चित है।

बघाटी –

तूमा देई इ दुनिया पैदा ओ अरो तूमे ई एते रे मूल कारण असो। जो आदमि इयां बाता खे जाणो से त्हारी शरणा खे प्राप्त ओए दे असो।

अनन्याश्चिन्तयन्तो त्वां ये जनाः समुपासते ।
भगवदाश्रितानां त्वं तेषां वहसि जीवनम् ।।५९।।

हिन्दी –

एकमात्र आपका ध्यान करते हुए जो लोग आपकी उपासना करते हैं, भगवान् का सहारा लेकर जीने वाले उन लोगों का जीवन निर्वाह हर प्रकार से आप स्वयं सम्भालते हैं।

बघाटी –

एकमात्र त्हारा ध्यान कर रो त्हारि पूजा करनि आले अरो त्हारा सहारा लय रो जिवणि आले आदमी रा हर तरह साय निर्वाह तूमे आफिए सम्बालो।

पत्रपुष्पादिकं सम्यक् श्रद्धया प्रददाति यः ।
प्रेम्णा तद्दीयमानं त्वं स्वीकरोषि हृदा सदा ।।६०।।

हिन्दी –

कर्मकाण्ड के माध्यम से पत्रपुष्पादि उपचारों को जो आदमी सच्ची श्रद्धा से आपको समर्पित करता है, प्रेमपूर्वक दिए जाने वाले उन उपचारों को आप सदा हृदय से स्वीकार करते हैं।

विशेष – महत्त्व समर्पित वस्तु का नहीं बल्कि भगवान् के प्रति श्रद्धाभाव का है।

बघाटी –

जो आदमि पत्ते अरो फूल आदि पूजा रा समान श्रद्धा साय तूमा खे चड़ाओ, प्यारा साय दीती ओंदी से चीजा तूमे दिला साय मंजूर करो।

समोऽसि सर्वभूतेषु न द्वेष्यः न प्रियस्तथा ।
भजति चेद् दुराचारी न सः भक्तः प्रणश्यति ।।६१।।

हिन्दी –

भगवन्! आप सभी जीवों के लिए समान बर्ताव वाले हैं। आप न किसी से द्वेष करते हैं न प्रेम। आप की कृपा से उस भक्त का भी कभी पतन नहीं होता।

बघाटी –

तूमे सबी जीवा साय एक समान बर्ताव करो। न कस साय द्वेष करदे न कस साय प्यार। जे दुराचारि आदमि बि त्हारी शरणा माँएं आय जाओ तो तेस प्रेमी रा कबे नाश नी ओंदा (से अमृता रे भावा खे प्राप्त ओय जाओ)

प्राप्यते हि परो भावः वस्तुनि कृष्णदर्शनात्।
वारं वारं तदा जन्म वस्तुनि वस्तुदर्शनात्।।६२।।

हिन्दी –

हर वस्तु में कृष्ण के दर्शन से भगवद्भाव की प्राप्ति होती है पर वस्तु को केवल वस्तु रूप में ही देखने से बार बार जन्म लेना पड़ता है।

बघाटी –

हर चीजा माँएं कृष्णा रे दर्शन करनि साय भगवाना रे भावा रि प्राप्ति ओ। पेरि चीजा खे जीचा रे ई रूपा माँएं देखणि साय बार बार जन्म लणा पड़ो।

तवेच्छया भवेज्जन्म मृत्युश्चैवान्ततो भवेत् ।
केन हन्यते कश्चित् कः कमत्रहन्ति च ।।६३।।

हिन्दी –

आपकी इच्छा से ही जीव का जन्म और मृत्यु होते हैं। युद्ध में कौन किसके द्वारा मारा जाता है और कौन किसको मारता है?

बघाटी –

त्हारी इच्छा साय प्राणी रा जन्म अरो मौत ओ। युद्धा माँएं कुण कसरे द्वारा मारा जाओ अरो कुण कसके मारो?

कृष्णाज्ञातः जगदेतत् चलति चैव तिष्ठति।
अत आज्ञां प्रणमामि तवैव परमात्मनः ।।६४।।

हिन्दी –

यह संसार कृष्ण की आज्ञा से चलता और रूकता है। इसलिए मैं आप परमात्मा की आज्ञा को प्रणाम करता हूँ।

बघाटी –

इ संसार कृष्णा री आज्ञा साय चलो अरो रूको। एनी खे आऊँ तूमा भगवाना री आज्ञा खे प्रणाम करू।

सर्वाः दिशः त्वया पूर्णाः आकाशान्तं हि भूमितः ।
प्रव्यथितं जगत्सर्वं उग्ररूपस्य दर्शनात् ।।७३।।

हिन्दी –

सभी दिशाएं आपसे भरी थी जमीन से आसमान तक सर्वत्र आप ही आप थे। आपके भयानक रूप से सारा संसार दुःखी हो रहा था।

बघाटी –

सबी दीशा माँएं तूमे ई विराज रोए थे। धरती दे गैणि तैं तूमे ई समाए दे थे। त्हारी डरावणी शक्ला दे सारि दुनिया डर रूइ थि।

वीरा उभयपक्षीयाः भीष्मः द्रोणादयस्तथा ।
प्रविशन्ति मुखे स्म ते पतंगाः ज्वलनं यथा ।।७४।।

हिन्दी –

दोनों ओर के सैनिक, भीष्म पितामह और द्रोणाचार्यादि आपके मुँह में इस तरह प्रवेश कर रहे थे जैसे पतंगे दीपक की लौ में प्रवेश करते हैं।

बघाटी –

दोय कनारे रे फौजि, भीष्म अरो द्रोणाचार्य बगैरा त्हारे मुँआं माँएं खे ईशे जाणि लग रोए थे जीशे फिंफड़े दीउए पाँएं खे जाओ।

त्वां शरणं प्रयातानां भजतां प्रेमपूर्वकम् ।
ददासि बुद्धियोगं तं येन त्वामुपयान्ति ते ।।६७।।

हिन्दी –

आपकी शरण (आलम्बन) को प्राप्त हुए जो लोग आपको प्यार से भजते हैं उनको आप बुद्धियोग (ज्ञान) देते हैं जिससे वे आपकी निकटता के भाव को प्राप्त करते हैं।

बघाटी –

त्हारी शरणा माँएं आए दे जो आदमि तूमा खे प्यारा साय बजो तीना खे तूमे परमात्मज्ञान देओ जनी साय से त्हारि निकटता प्राप्त करो।

भक्तानां तु स्वरूपस्त्वं जीवस्यात्मनि संस्थितः ।
नाशयसि तमः घोरं ज्ञानदीपेन भास्वता ।।६८।।

हिन्दी –

आप जीव की आत्मा में स्थित भगवत्प्रेमियों के स्वरूप हो और आप उनके अन्दर के घोर अन्धकार (अनित्य वस्तुओं के प्रति मोह) का चमकते हुए ज्ञानदीपक (सभी चीजें भगवान् का रूप है के अनुभव) से नाश करते हैं।

विशेष – हमारा जीवात्मा परमात्मा का एकांश होने से परमात्मरूप ही है, इस ज्ञान से हमारा अज्ञान (जीवात्मा का नश्वर शरीरादि में अपनापन) नष्ट होता है।

बघाटी –

तूमे जीवा री आत्मा माँएं स्थित भगवाना रे प्रेमी रे स्वरूप असो अरो तूमे तीना रे आंतरिक घोर अंधकारा (मोह) रा चमकदे दिउए (सब ठेंव भगवान् असो रे अनुभवा) साय नाश करो।

परंब्रह्म त्वमेवासि परंधाम तथैव च ।
ऋषय उक्तवन्तो हि स्वयं चैव ब्रवीषि मे ।।६९।।

हिन्दी –

आप ही परमात्मा हैं और आप ही परमधाम (परमात्मा का वास स्थान) हैं। ऋषियों ने यह बात बताई है और आपने स्वयं गीता में ऐसा ही बताया है।

बघाटी –

तूमे ई परमात्मा असो अरो तूमे ई परम धाम (भगवाना रा गौर) असो। म्हारे ऋषि–मुनिए बि बताया राखा अरो तूमे गीता माँएं आपि बि ईशा ई बोल राखा।

नैव तदस्ति जगत्यां यदुत्पद्येत् त्वया विना ।
तेजो भागः पदार्थेषु तवैव तु दयानिधेः ।।७०।।

हिन्दी –

दुनिया में ऐसी कोई चीज नहीं जो आपके बिना पैदा हो। हर चीज में आपके तेज (विशेष शक्ति) का ही अंश है।

बघाटी –

दुनिया माँएं इशि कोई जीच नी आथि जो तूमा दे बीना पैदा ओ। हर चीजा माँएं त्हारी विशेष शक्ति रा ई हिस्सा असो।

दिव्यरूपं भवद् दृष्टमनन्तं सर्वतो मुखम् ।
सर्वाश्चर्यमयं देव त्वद्दत्तेन हि चक्षुषा ।।७१।।

हिन्दी –

भगवन्! मैंने आपके दिए हुए दिव्य नेत्रों से आपका सभी ओर को मुख वाला, अलौकिक, सीमारहित और सभी आश्चर्यों से पूर्ण रूप देखा है।

बघाटी –

मोंएं त्हारी दीती दी दिव्य आखि साय त्हारा सबी कनारे खे मुआं आला, अलौकिक, सीमारहित अरो सबी आश्चर्या साय पूर्ण रूप देख राखा।

सूर्यसहस्रतुल्यः सः प्रकाशस्ते महात्मनः ।
दृष्टं पूर्वं न केनापि विराड् रूपं हि तद्यथा ।।७२।।

हिन्दी –

आप भगवान् का प्रकाश हजारों सूर्यों के प्रकाश जैसा था। उस जैसा आपका विराट् रूप इससे पहले किसी ने नहीं देखा है।

बघाटी –

तूमा रा पेशा हजारा सुरजा रे पेशे जीशा जा था तीशा जा त्हारा विराट् रूप ऐइदे पैले कुणिए नी देख राखा।

पुरूषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान्।
कारणं गुणसङ्गोऽस्य संसारे जीवजन्मसु ।।८१।।

हिन्दी –

मनुष्य का जीवात्मा (शरीर) प्रकृति में रहकर प्रकृति से पैदा हुए सत्त्वादि तीन गुणों को अज्ञान से भोगता है। इसका कारण जीवात्मा का तीन गुणों के प्रति मोह (अपनापन) है जिससे संसार में विविध जीवों के रूप में उसको बार-बार जन्म लेना पड़ता है।

विशेष – चेतन जीवात्मा का जन्मचक्र में पड़ने का कारण उसके द्वारा अचेतन गुणों को अपना मानना है। जबकि जीव और शरीर दोनों में मौलिक अंतर है।

बघाटी – जीवात्मा प्रकृति (शरीर) माँएं रय रो प्रकृति दे पैदा ओए दे तीन गुण भोगो। ईशा जीवात्मा रे तिं गुणा साय मोहा (अपणेपणा) री बजा साय ओ। एनी साय तेसके दुनिया माँएं अनेक जीवा रे रूपा माँएं बार बार जन्म लणा पड़ो। इ अनुभव जेंवदे जिउए ओय जाओ तो सर्वोत्तम बात असो।

प्रकृत्यैव हि कर्माणि क्रियमाणानि पूर्णतः।
य आत्मानमकर्तारं पश्यति सो हि पश्यति ।।८२।।

हिन्दी –

जो समस्त कर्मों को प्रकृति के तीन गुणों के द्वारा किए जाते हुए देखकर अपने आप को कर्ता रूप में नहीं देखता, वास्तव में वही ज्ञानी है।

बघाटी – जो सब काम प्रकृति रे द्वारा किए जांदे देखो अरो आपि खे कर्ता रे रूपा माँएं नी देखदा असलि माँएं से ई ज्ञानि असो।

कालस्त्वं लोकनाशार्थं प्रवृत्त इह दृश्यसे ।
नङ्क्ष्यन्ति मां विनाप्येते कर्णादिकाः त्वया हताः ।।७५।।

हिन्दी –

यहाँ पर आप संसार के नाश के लिए काल या मृत्युरूप में लगे दिख रहे हैं। ये सभी योद्धा मेरे बिना भी कर्णादि आपके द्वारा नष्ट हो जाएंगे।

विशेष – युद्ध भगवान् की इच्छा से होता है, मनुष्य की नहीं। जिनको भगवान् मारना चाहता है उनको कोई नहीं बचा सकता।

बघाटी –

एती तूमे संसारा रे नाशा री खातर काल या मौति रे रूपा माँएं लगे दे देख रउए, इ सब कर्णादि फौजि मांदे बीना बि त्हारे मारनि साय नष्ट ओय जाणे।

आदिदेवः गुरूश्चैव विश्वस्य परमाश्रयः ।
स्थितः व्याप्य जगत्सर्वं त्वमेव शरणं मम ।।७६।।

हिन्दी –

आप दुनिया के सर्वप्रथम देवता और गुरू हैं। आप (श्रीकृष्ण) विश्व के सबसे बड़े सहारा हैं। आप सारे संसार को व्याप्त किए हुए हैं। आप ही मेरी शरण या सहारा हैं।

बघाटी –

तूमे दुनिया रे सबी दे पैले देवता अरो गुरू असो। तूमे दुनिया रे सबी दे बड़े आसरा असो। तूमे सारी दुनिया माँएं व्याप्त असो। तूमे ई मेरि शरण या आसरा असो।

वायुयमादिदेवस्त्वं जीवेशः ब्रह्मणः पिता ।
नमस्तुभ्यं जगत्पित्रे भूयो भूयो नमाम्यहम् ।।७७।।

हिन्दी –

आप वायु और यमादि देवता हैं। आप सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी के पिता परमात्मा हैं। विश्व के पिता आपको नमस्कार है। मेरा आपको बार – बार नमस्कार है।

विशेष – ब्रह्मा जी भी त्रिगुणमय प्रकृति के अन्दर ही विराजमान हैं जो कि संसार का एक श्रेष्ठतम पद है।

बघाटी –

तूमे वायु अरो यम आदि देवता असो। तूमे दुनिया बणावणि आले ब्रह्माजी रे बाव भगवान् असो। दुनिया रे तूमाँ बापु खे आऊँ डाल करूँ। मेरि तूमा खे बार – बार डाल असो।

अपमानं मया देव अज्ञानेन तु यत्कृतम् ।
क्षन्तव्योऽहं कृपापूर्वं शरणस्थः नमाम्यहम् ।।७८।।

हिन्दी –

उचित आदरसूचक शब्दों का प्रयोग न किए जाने आदि से अज्ञानवश मैंने आप भगवान् का जो अपमान किया है उसके लिए कृपया मुझे क्षमा कर दें। मैं आपकी शरण में आया हुआ आपको नमस्कार करता हूँ।

बघाटी –

सही आदरसूचक शब्दा रा अंजाणेपणा माँएं मोंएं त्हारि भगवाना रि जो बेजति कर राखि तेते खे कृपा कर रो मारवे माफ कर देओ। आऊँ त्हारी शरणा माँएं आया दा तूमा काय हाथ जोड़ऊ।

त्वदर्थं कर्मकर्ता हि भक्तस्ते सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः सः त्वामेति यादव ।।७९।।

हिन्दी –

आपका जो प्रेमी बिना मोह (ममत्व) के आपके लिए कर्म करता है और समस्त जीवों से मित्रता का भाव रखता है वह आपको प्राप्त होता है।

विशेष – भगवान् को प्राप्त होने का अर्थ है भगवान् के अमृत भाव को प्राप्त होना।

बघाटी –

त्हारा जो प्रेमि बीना मोहा (आपणे कर्मा माँएं आपणे पणा) दे त्हारी खातर कर्म करो अरो सबी जीवा साय प्रेम राखो से तूमा (त्हारे परमात्मभावा) खे प्राप्त होय जाओ।

मनोयोगेन ये भक्ताः प्रकटं त्वामुपासते ।
देहासक्तिविहीनास्ते तवातीवप्रियाः मताः ।।८०।।

हिन्दी –

तुम्हारे जो प्रेमी तुम्हारे प्रकट (अवतार) रूपकी मन लगाकर उपासना (पूजा) करते हैं अपने शरीराभिमान से रहित वे लोग आपको बहुत प्रिय हैं।

विशेष – संसार में समग्र जीवसमुदाय के भलाई के नियमों की स्थापना अवतार ही करते हैं।

बघाटी –

त्हारे जो प्रेमि त्हारे सगुण (अवतार) रूपा रि मन लाय रो पूजा करो, शरीराभिमाना दे रहित से आदमि तूमा खे बहुत प्यारे लगो।

प्राप्नोति यः स्वरूपं च समलोष्टाश्मकाञ्चनः ।
सर्वकर्मपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ।।८९।।

हिन्दी –

जो मनुष्य अपने जीवात्मा के निर्मल स्वरूप को प्राप्त कर लेता है वह मिट्टी और सोने को एक समान देखता है और अपने सब कर्मों के प्रति कर्तापन का भाव छोड़ देता है, वह गुणातीत (गुणों से परे रहने वाला) कहलाता है।

विशेष – सम्पूर्ण संसार की सीमा केवल तीन गुणों तक है उससे परे भगवान् का भाव है।

बघाटी –

जो आदमि आपणे जीवात्मा रे निर्मल स्वरूपा खे प्राप्त कर लौ से माटि अरो सूने खे एखे जा देखो अरो आपणे सब कर्म कर्तापणा रे भावा खे छाड रो करो तेसके गुणातीत बोली। एबे मेरा कर्त्तव्य आऊँ नी करदा, तूमे भगवान् करो।

न तद्भासयते सूर्यः न चन्द्रश्चैव तारकाः ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं तव ।।९०।।

हिन्दी –

आपके परमधाम में न सूर्य का प्रकाश है न चन्द्रमा का और न तारों का। जहाँ पर पहुँचकर वापिस तीन गुणों की दुनिया में नहीं लौटते वहाँ आप परमात्मा का निवास है।

बघाटी –

ना तेती सुरजा रा प्याशा आथि ना चन्द्रमा रा अरो न तारे रा। जेती पौंच रो जन्म – मरणा रा चक्र छुट जाओ से गौर तूमा कृष्ण भगवाना रा असो।

भूतानां च पृथग्भावं प्रकृत्यां यदि पश्यति ।
तस्मादेव च विस्तारं ब्रह्म संजायते तदा ।।८३।।

हिन्दी –

जब मनुष्य प्रकृति में जीवों के अलग – अलग होने के भाव को एक परमात्मा के अन्दर देखता है और उस परमात्मा से ही समस्त जीवों का विस्तार हुआ देखता है तब वह परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।

बघाटी –

जबे आदमि प्रकृति माँएं जीवा रे जूदे जूदे भाव एकी परमात्मा माँएं देखो अरो तेसी परमात्मा दे सबी जीवा रा विस्तार ओआ दा देखो तबे से परमात्मा खे प्राप्त ओय जाओ।

जीवात्मायं तवांशत्वात् परमात्मा न संशयः ।
शरीरस्थोऽपि विश्वेश शरीरे नैव लिप्यते ।।८४।।

हिन्दी –

हमारा जीवात्मा आपका ही एक अंश होने से निस्सन्देह परमात्मा ही है। यह शरीर में रहते हुए भी नश्वर शरीर से लिप्त (मोहित) नहीं होता।

विशेष – वास्तव में शरीरस्थ हमारा जीवात्मा परमात्मा की तरह ही निर्लिप्त है, इस तथ्य का अनुभव करना भगत्प्राप्ति के लिए पर्याप्त है।

बघाटी –

म्हारा जीवात्मा परमात्मा रा ई एक अंश ओणि साय विना शक परमात्मा असो। इ शरीरा माँएं रौंदे बि शरीरा खे आपणा नी मांदा।

यथा प्रकाशयत्येक: पूर्णं जगदिदं रवि: ।
तथैवात्मा शरीरं तु प्रकाशयत्यसंशय: ।।८५।।

हिन्दी –

जैसे एक सूर्य सारे संसार को प्रकाशित करता है वैसे ही हमारा जीवात्मा हमारे सम्पूर्ण शरीर को प्रकाश, चेतना व ज्ञान देता है।

विशेष – अपने जीवात्मा के प्रकाश में देखी गई कोई भी वस्तु या विचार असत्य नहीं होते।

बघाटी –

जीशा एक सुरज सारी दुनिया खे प्रकाश देओ तीशा ई म्हारा जीवात्मा म्हारे सारे शरीरा खे प्रकाश (ज्ञान) देओ।

सत्त्वं प्रकृतिजन्यं हि निर्विकारं प्रकाशकम् ।
सुखरागेण बध्नाति ज्ञानसङ्गेन यादव ।।८६।।

हिन्दी –

प्रकृति से पैदा हुआ विकाररहित और प्रकाशक (ज्ञान फैलाने वाला) सत्त्वगुण ज्ञान और सुख के प्रति लगाव पैदा करके जीवात्मा को बन्धन बार – बार (जन्मों के कष्ट) में डालता है।

विशेष – सत्त्वगुण यद्यपि श्रेष्ठतम गुण है पर इसमें किया गया अपनापन भी जीवात्मा को बांधने वाला है, इससे बचकर ही भगवान् के साम्राज्य में प्रवेश करना संभव है।

बघाटी –

प्रकृति दे पैदा ओआ दा विकारहित अरो ज्ञानदायक सत्त्वगुण ज्ञान अरो सुखा रे प्रति आपणापण पैदा कर रो जीवात्मा खे बन्धना (कष्टा) माँएं पाओ।

शरीरेऽस्मिन् यदा चैव स्वच्छता हि प्रबर्धते ।
कर्म विवेकतश्चैव सत्त्ववृद्धिस्तदा भवेत् ।।८७।।

हिन्दी –

जब हमारे शरीर में ज्ञान से स्वच्छता पैदा होती है और हमारे कार्य विवेक (सही निर्णय) पूर्वक होने लगते हैं तब अपने अन्दर सत्त्वगुण की बढ़ोतरी समझनी चाहिए।

विशेष – सत्त्वगुण की वृद्धि शरीर में स्वच्छता पैदा करके उसको भगवत्प्राप्ति के योग्य बनाती है।

बघाटी –

जबे म्हारे शरीरा माँएं स्वच्छता पैदा ओ अरो म्हारे काम विवेका (सही निर्णया) साय ओणि लगो तबे आपणे शरीरा माँएं सत्त्वगुणा रि बड़ोतरि समजणि चई।

गुणानेव हि कर्तारं नरो यदा हि पश्यति ।
त्वां गुणेभ्य: परं वेत्ति त्वद्भावं सो हि गच्छति ।।८८।।

हिन्दी –

जब मनुष्य सत्त्वादि तीन गुणों को ही कर्मों के कर्ता के रूप में देखता है तब वह आप परमात्मा के भाव को प्राप्त हो जाता है।

विशेष – वास्तव में अपने जीवात्मा को तीन गुणों के प्रभाव से मुक्त करने से ही कृष्णभाव की प्राप्ति होती है।

बघाटी – जबे आदमि सत्त्वादि तिं गुणा खे कर्मा रे कर्ता रे रूपा माँएं देखो अरो तूमा भगवाना खे गुणा दे पोरड़े देखो तबे से तूमा परमात्मा रे भावा खे प्राप्त ओय जाओ।

लोके मोहविमुक्तो यः जानाति पुरूषोत्तमम् ।
श्रद्धया सः तु भक्तस्त्वां संभजत्येकनिष्ठया ।।९७।।

हिन्दी –

संसार में जो आदमी मोह (अज्ञान) से ग्रस्त न होकर समस्त पुरूषों (जीवात्माओं) से उत्तम परमात्मा या भगवान् रूप सर्वोत्तम भाव को जानता है वह श्रद्धा और प्रेम के साथ एक निष्ठ होकर आपका भजन करता है।

बघाटी –

दुनिया माँय जो आदमि दुनिया री चीजा रे प्रति लगाव ना राख रो सबी जीवात्मा दे उत्तम भगवाना खे जाणो से श्रद्धा अरो प्यारा साय पूरी लगना साय त्हारा भजन करो।

आसुरं भावमापन्नाः भवन्ति न विवेकिनः ।
सदाचारविहीनास्ते सत्यं न पालयन्ति च ।।९८।।

हिन्दी –

जो असुर के स्वभाव को प्राप्त हो जाते हैं वे लोग विवेकी (सही और गलत काम में फरक करने वाले) नहीं होते। न तो वे सदाचार (अच्छे आचरण) वाले होते हैं और न ही वे सत्य (सभी जीवों के हित की बात) का पालन करते हैं।

बघाटी –

जो आदमि राक्षसि स्वभावा रे ओ से ठीक अरो गलत कामा माँएं फरक नी कर सकदे। ना तो से अच्छा आचरण करदे अरो ना ई से सबी जीवा री बलाई रा काम करदे।

गन्धं पुष्पाद्यथा वायुः समादाय तु गच्छति ।
इन्द्रियाणि तथा जीवः देहं नवं हि गच्छति ।।९१।।

हिन्दी –

जैसे वायु फूल से गन्ध लेकर चलती है उसी प्रकार हमारा जीवात्मा इन्द्रियों को लेकर नए शरीर में प्रवेश करता है।

बघाटी –

जिशि पौण फूला दे बास लय रो चलो तीशा ही म्हारा जीवात्मा इन्द्रिय लय रो नोए शरीरा माँएं प्रवेश कर जाओ।

समाश्रृत्य मनश्चैव इन्द्रियाणि तथैव च ।
देहस्थः परमात्मायं विषयानुपसेवते ।।९२।।

हिन्दी –

मन और इन्द्रियों का सहारा लेकर शरीर में रहने वाला यह परमात्मा (जीवात्मा) विषयों का भोग करता है।

विशेष – जो व्यक्ति जल की बून्द में सम्पूर्ण वरूण लोक के दर्शन कर सकता है वह अपने जीवात्मा में परमात्मा के दर्शन आसानी से कर सकता है।

बघाटी –

मना अरो इन्द्रिय रा आसरा लय रो शरीरा माँय रौणि आला इ भगवान् जीवात्मा विषय रा भोग करो।

भ्रमन्तं तं शरीरस्थं भुञ्जानं विषयान् तथा ।
मोह ग्रस्ता: न पश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञान चक्षुष: ।।९३।।

हिन्दी –

उस जीवात्मा को नाना शरीरों में घूमते हुए और विषयों का भोग करते हुए मोह से ग्रस्त (इंद्रियों के विषयों को अपने जीवात्मा का मानने वाले) अज्ञानी लोग नहीं देखते बल्कि ज्ञानी लोग देखते हैं।

विशेष – ज्ञानी लोग अपने अनश्वर आत्मा (परमात्मा) का अनुभव करते हुए अपने कर्त्तव्य से नहीं चूकते।

बघाटी –

तेस जीवात्मा खे रेके कई शरीरा माँय गुमदे अरो विषय रा बोग करदे मोहग्रस्त (विषय खे आपणे जीवात्मा रा माननि आले) अज्ञानि आदमि नी देखवदे बल्के ज्ञानि आदमि देखवो। तिं गुणा आली सांसारिक चीजा खे आपणे जीवात्मा री ना मानणा ही ज्ञान ओ।

तव सूर्यगतं तेज: पूर्णं भासयते जगत् ।
भूमिं प्रविष्य भूतानि त्वं धारयसि तेजसा ।।९४।।

हिन्दी –

आपका सूर्य में रहने वाला प्रकाश सारी दुनिया में प्रकाश करता है और आप धरती में अपनी शक्ति से प्रवेश करके समस्त जीवों को धारण करते हैं।

बघाटी –

त्हारा सुरजा माँएं रौणि आला प्याशा सारी दुनियाँ माँएं प्याशा करो अरो तूमे आपणी शक्ति साय धरती माँएं प्रवेश कर रो सबी जीवा खे धारण करो।

पुष्णासि पादपान् सर्वान् चन्द्रो भूत्वा रसात्मक: ।
त्वमुदराग्निरूपेण पचस्यन्नं हि खादितम् ।।९५।।

हिन्दी –

आप रसीले चन्द्रमा बनकर पेड़–पौधों का पोषण करते हैं। आप पेट की अग्नि (पाचन शक्ति) के रूप में खाए जाने वाले पदार्थों को पचाते हैं।

बघाटी –

तूमे रसीलि जूणि रे रूपा माँएं पेड़–पौधे खे पालो। तूमे पेटा री आगि रे रूपा माँएं सब खाद्य पदार्थ पचाओ।

जीवात्तु पुरूषस्त्वन्य: परमात्मेत्युदीरित: ।
लोकत्रयप्रवेशाद् य: पालयति निरन्तरम् ।।९६।।

हिन्दी –

जीवात्मा से परे एक अन्य आत्मा परमात्मा कहलाते हैं जो तीनों लोकों में प्रवेश करके त्रिलोकवासियों का पालन करते हैं।

विशेष – समस्त जीवात्माओं का संगठित रूप परमात्मा है जिसकी संकल्पशक्ति से यह सृष्टि चलती है।

बघाटी –

जीवात्मा दे रेका एक आत्मा परमात्मा कहलाओ जो तिं लोका माँय प्रवेश कर रो सबी जीवा रा पालन करो।

अश्रद्धया कृतं दानं पुण्यादिकं च यत्कृतम् ।
असदित्युच्यते सर्वं इहलोके परत्र च ।।१०५।।

हिन्दी–

श्रद्धा के बिना जो दान और पुण्य किए जाते हैं सब इस लोक और परलोक में (जड या अचेतन) कहे जाते हैं।

बघाटी–

श्रद्धा दे बिना जो दान अरो पुण्य आदि काम किए जाओ से सब लोका अरो परलोका माँएं प्राणहीन बोले जाओ।

शास्त्रोक्तस्य तु सन्न्यासः कर्मणः न प्रशस्यते ।
मोहात्तस्य तु त्याग स्तामसो हि प्रकीर्तितः ।।१०६।।

हिन्दी–

शास्त्रों में बताए गए कर्तव्यों का त्याग करना प्रशंसनीय नहीं बताया गया है। मोह या अज्ञान से उसका त्याग करना तामस (राक्षसी) माना गया है।
विशेष–वेदों और शास्त्रों में बताए गए मनुष्य के कर्तव्य भगवान् की आज्ञाएं हैं।

बघाटी–

वेदा अरो शास्त्रा माँएं बतावे ओंदे आपणे कामा रा त्याग करना प्रशंसनीय नी माना गोआ। अज्ञाना (आपणी मर्जी) साय तेते रा त्याग करना राक्षसिपण असो।

नास्त्यत्र परमात्मा हि जगद्युगलकामतः ।
कुर्वन्तः कर्म ते क्रूरं जायन्ते जगन्नाशकाः ।।९९।।

हिन्दी–

इस संसार में कोई भगवान् नहीं है। मनुष्य की उत्पत्ति पुरूष और स्त्री की परस्पर कामना से होती है। इस आतंकवादी विचारधारा के लोग क्रूर (हिंसक) काम करते हैं और वे दुनिया का विनाश करते हैं।

बघाटी–

इयां दुनिया माँएं कोई भगवान् नी आथि। आदमि रा जन्म ठींडा रो ज्वानसा रे मिलनि साय आफिए ओ। इयां सोचा रे आदमि हिंसक काम करो और दुनिया रा नाश करो।

आशाजालशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः ।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति ते पुनः पुनः ।।१००।।

हिन्दी–

सैंकड़ों आशाओं के जाल में फंसे, इच्छाएं और क्रोध करने वाले और कामनाओं और भोगों में आसक्त (सांसारिक चीजों को जीवात्मा के लिए मानने वाले) लोग इस दुर्लभ मनुष्य जीवन के लक्ष्य से चूककर बार–बार नरक (नीच योनियों) में गिरते और जन्म लेते हैं।

बघाटी–

सैंकड़ों आशा रे जाला माँएं फशे दे, इच्छा अरो रोष करनि आले अरो कामना रो इच्छा खे आपणे जीवात्मा री चीजा मानणि आले एस दुर्लभ मनुष्य जन्मा रे लक्ष्य दे चुक रो बार–बार नरका माँएं पड़ो।

कामः क्रोधस्तथा लोभः जीवात्मनो विनाशकाः ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन शत्रुत्रयमिदं त्यजेत् ।।१०१।।

हिन्दी –

कामनाएँ, क्रोध और लालच जीवात्मा का विनाश करने वाले हैं इसलिए इन तीन शत्रुओं का सदा त्याग करना चाहिए।

बघाटी –

इच्छा, रोष अरो लालच जीवात्मा रा विनाश करो, एनी री खातर ईना तिं दुश्मणा रा हमेशा त्याग करना चईं।

घोरं शास्त्रविरूद्धं च तपः कुर्वन्ति ये जनाः ।
कृशं कुर्वन्ति देहस्थं तेऽसुरास्त्वां सुनिश्चितम् ।।१०२।।

हिन्दी –

शास्त्रों में बताई गई विधि के विरूद्ध जो लोग कठोर तपस्या (श्रम) करते हैं वे राक्षसी स्वभाव के लोग अपने शरीर में स्थित परमात्मा (हृदयस्थ जीवात्मा) को कमजोर करते हैं, यह सुनिश्चित है।

बघाटी –

शास्त्रा माँएं बतावी दी विधि रे उलट जो आदमि कठिन मेहनत करो से राक्षसि स्वबावा रे आदमि आपणे बीतरा रे परमात्मा खे कमजोर करो, इ पक्कि बात असो।

प्रणवादिभिरूक्तो हि परमात्मा तु साक्षिभिः ।
ब्राह्मणास्तेन त्रिवेदाः यज्ञाश्च रचिताः पुरा ।।१०३।।

हिन्दी –

परमात्मा के ओमादि नाम ऋषियों ने बताए हैं। इन्हीं से संसार की रचना के समय ब्राह्मण, वेद और यज्ञों की रचना हुई।

बघाटी –

ऋषिए परमात्मा रे ओमादि नांव बताय राखे। ईना दे प्राणे टैमा माँएं ब्राह्मणा, वेदा अरो जगा रि रचना ओई थि।

तस्मादोमिति संस्मृत्य सततं वेदवादिनाम् ।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः यज्ञदानतपः क्रियाः ।।१०४।।

हिन्दी –

इसी कारण वेदों को प्रमाण मानने वाले लोगों के शास्त्रोक्त यज्ञ, दान, तप आदि कार्य ओम् का उच्चारण करके आरम्भ होते हैं।

बघाटी –

एते री बजा साय वेदा खे प्रमाण मानणि आले सनातनि आदमी रे शास्त्रोक्त यज्ञ, दान, तप आदि काम ओम् रा उच्चारण कर रो शुरू ओ।

यतो जन्म हि भूतानां व्याप्तं जगत् च येन तु ।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ।।११३।।

हिन्दी –

जिस परमात्मा से जीवों का जन्म होता है और जो सारी दुनिया में समाया हुआ है उसको मानव अपने अपने वर्ण के कर्म से पूजकर उस परमात्मा को प्राप्त करता है।

बघाटी –

जेस भगवाना दे सबी जीवा रा जन्म ओ अरो जो सारी दुनिया माँएं समाया दा असो तेस भगवाना खे आदमि आपणे आपणे वर्णा रे कर्मा साय पुज रो प्राप्त करो।

सहजं कर्म न त्याज्यं दोषयुक्तमपि यद्भवेत् ।
कार्यमात्रं हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृतम् ।।११४।।

हिन्दी –

अपना स्वाभाविक कर्म दोषयुक्त होने पर भी नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि दुनिया के सारे कर्म धुएं से आग की तरह दोषों से युक्त है।

विशेष – सैनिक के कर्म में हिंसादोष होने पर भी वह त्याज्य नहीं होता।

बघाटी –

आपणा स्वाभाविक कर्म (व्यवसाय या पेशा) खोटा आला ओणि पाँएं बि नी छाडणा चईं क्योंकि दुनिया रे सारे कर्म आगि री तरह धुएं साय युक्त असो।

कर्तव्यमेव यत्कर्म नियतं हि विधीयते ।
सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः ।।१०७।।

हिन्दी –

शास्त्रों द्वारा बताया गया अपना जो निर्धारित कर्म, यह करना ही है इस सोच के साथ आसक्ति और फलकी इच्छा को छोड़कर किया जाता है वह त्याग सात्त्विक (पवित्र) माना गया है।

बघाटी –

शास्त्रा माँएं बतावा दा आपणा जो कर्तव्य, इ जरूर करना इशा सोच रो लगावा अरो फला री इच्छा दे बीना किया जाओ से त्याग सात्त्विक ओ।

न शरीरयुतैः शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः ।
यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते ।।१०८।।

हिन्दी –

हम शरीरधारी लोगों द्वारा कर्म सम्पूर्णतया नहीं छोड़े जा सकते। जो कर्म के फल का त्याग करता है वही मनुष्य त्यागी कहा जाता है।

बघाटी –

हामे शरीरधारि कामा खे सम्पूर्णतया नी छाड सकदे। जो आपणे कर्मा रे फला रा त्याग करो से आदमि त्यागि माना जाओ।

यस्य नाहंकृतो भावो यस्य बुद्धिः न लिप्यते ।
सर्वान् हत्वापि सः युद्धे न हन्ति न च बध्यते ।।१०९।।

हिन्दी–

जिस आदमि में अहंकार की भावना (यह काम मैंने किया है, यह) नहीं होती और जिसकी बुद्धि अपने कर्म में लिप्त नहीं होती वह सैनिक युद्ध में सब सैनिकों को मारकर भी न किसी को मारता है और न उसको कोई बन्धन (पाप) लगता है।

बघाटी–

जेस आदमि माँएं आपणे कर्मा रे प्रति अहंकारा रि भावना नी ओंदि अरो जसरि बुद्धि आपणे कर्मा साय नी लिपटदि से सबी सैनिका खे मार रो बि कसके नी मारदा और ना तेसके कोई बन्धन या पाप लगदा।

रागहीनोऽनहंकारी धैर्योत्साहसमन्वितः ।
फलेऽफले समश्चैव कर्ता सात्विक उच्यते ।।११०।।

हिन्दी–

राग (वस्तु को अपने लिए मानना) से रहित, कर्मकर्ता होने के अभिमान से रहित, धैर्य और उत्साह से युक्त और कर्म के फल के मिलने अथवा न मिलने में समान भाव से रहने वाला कर्ता सात्त्विक कहलाता है।

बघाटी–

आपणे कर्मा खे आपणा ना मानणि आला, कर्ता होणि रे अभिमाना दे रहित, धैर्य अरो उत्साहा आला अरो कर्मा रे फला रे मिलणि अरो ना मिलणि माँएं एखे जा रौणि आला कर्ता सात्त्विक माना जाओ।

न तदस्ति पृथिव्यां वा स्वर्गे देवेषु वा तथा ।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात्त्रिभिर्गुणैः ।।१११।।

हिन्दी–

धरती, स्वर्ग और देवताओं में ऐसा कोई जीव नहीं है जो प्रकृति के सत्त्वादि तीन गुणों के प्रभाव से अछूता हो।

बघाटी–

दरती, सुर्ग अरो देवते माँएं ईशा कोई जीव नी आथि जो प्रकृति रे सत्त्वादि तिं गुणा रे असरा दे अछूता ओ।

ब्राह्मणादिकवर्णानां स्वभावप्रभवैर्गुणैः ।
कर्माणि प्रविभक्तानि इहलोके हि यादव ।।११२।।

हिन्दी–

इस संसार में ब्राह्मणादि वर्णों के कर्म उनके स्वभावजन्य गुणों के आध ार पर भगवान् के द्वारा बाँटे गए हैं।

बघाटी–

इयां दुनिया माँएं ब्राह्मण आदि वर्णा रे कर्म तीना रे स्वाभाविक गुणा रे आधारा पाँएं भगवाना रे बान्डे दे असो।

पठिष्यति नरो यस्तु मे कृष्णाज्ञाभिवन्दनम् ।
कृष्णाश्रयात् सुदिव्यं कृष्णधाम गमिष्यति ।।१२१।।

हिन्दी –

जो व्यक्ति मेरे इस कृष्णाज्ञाभिवन्दन नामक काव्य को पढ़ेगा वह श्री कृष्ण के आश्रय को प्राप्त करके सुदिव्य कृष्ण धाम को प्राप्त करेगा।

बघाटी –

जो आदमि मेरे एस कृष्णाज्ञाभिवन्दन नावां रे काव्य खे पड़ला से कृष्णा री शरणा खे प्राप्त ओएरो सुदिव्य कृष्णलोका खे प्राप्त ओ जाणा।

!! इति !!

त्वदाश्रृतो हि कुर्वाणः सर्वकर्माणि सर्वदा ।
त्वत्प्रसादादवाप्नोति नित्यं पदं सनातनम् ।।११५।।

हिन्दी –

आपके आश्रय में रहकर जो आदमी हमेशा सारे कर्म करता है वह आप भगवान् की कृपा से नित्य सनातन स्थान को प्राप्त करता है।

बघाटी –

जो आदमि त्हारे आसरे रय रो सारे कर्म करो से तूमा भगवाना री कृपा साय नित्य सनातन स्थान प्राप्त करो।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशे कृष्ण तिष्ठति ।
भ्रामयसीह भूतानि यथास्माकं हि कामनाः ।।११६।।

हिन्दी –

आप भगवान् समस्त जीवों के हृदय में निवास करते हैं और कामनाओं के अनुसार विविध जीवयोनियों में हमको घुमाते रहते हैं।

विशेष – अपनी इच्छाओं का गुलाम मनुष्य असंख्य जीवयोनियों के अन्दर घूमकर सुख और दुःख के स्वाद को चखता रहता है। ईश्वरीय स्थायी परमानन्द उससे अलग है।

बघाटी –

तूमे भगवान सबी जीवा रे हृदय माँएं निवास करो अरो म्हारी इच्छा रे अनुसार हामा खे नेक बनेकी जीवयोनि माँएं गुमाया करो।

धर्मः मे शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
त्वं मां सकलपापेभ्यो मोक्षयिष्यस्यसंशयः ।।११७।।

हिन्दी –

अब धर्म मेरी शरण नहीं है बल्कि आप मेरी शरण हैं। आप ही मुझे मेरे कर्तव्यनिर्वाह से होने वाले पाप से छुड़ाएंगे।

विशेष – सर्वोपरि धर्म भगवान् की शरण को ग्रहण करना है।

बघाटी –

एबे दर्म मेरि शरण नी आथि बल्के तूमे भगवान मेरि शरण असो। त्हारे ई आऊँ मेरे कामा साय ओणि आले पापा दे छड़ावणा।

प्रणम्य हृदयस्थं त्वां जीवानां जीवनाश्रयम् ।
यद्यत्कारयसे कर्म तत्करोमि त्वदाज्ञया ।।११८।।

हिन्दी –

जीवों के जीने के सहारे हृदय में स्थित जीवात्मारूप आप परमात्मा को प्रणाम करके आपकी आज्ञानुसार जो भी कर्म आप करवाएंगे वह मैं करूँगा।

बघाटी –

जीवा रे जिवणि रे सहारे हृदय माँएं स्थित जीवात्मारूप तूमा परमात्मा खे आऊँ डाल करू, त्हारी आज्ञा रा मेरे पालन करना। मान्दे जो बि कर्म करावले से मेरे करना।

वचनं भवदीयं हि न मे पालयतो व्यथा ।
त्वदीयं कर्म गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये ।।११९।।

हिन्दी –

हे गोविन्द! आपकी आज्ञा का पालन करते हुए मुझे कोई दुःख नहीं है। आपका कर्म (युद्ध) आपको ही समर्पण करता हूँ।

बघाटी –

हे कृष्ण! त्हारी आज्ञा रा पालन करदे मारवे कोई कष्ट नी आथि। तारा कर्म (युद्ध) तूमा खे ई समर्पण करू।

कृष्णवचनमादृत्य कर्म य आचरिष्यति ।
वेदोपास्यं तथाश्रुत्य नैव पापमवाप्स्यति ।।१२०।।

हिन्दी –

श्री कृष्ण भगवान् के वचनों का आदर करके जो अपना सहज कर्म करेगा और वेदों द्वारा उपास्य उनकी जो शरण ग्रहण करेगा उसे कोई पाप नहीं लगेगा।

बघाटी –

कृष्ण भगवाना रे वचना रा आदर कर रो जो आपणा सहज कर्म करला अरो वेदा रे उपास्य तीना रि शरण ग्रहण करला तेसके कोई पाप नी लगणा।

हरिः इलैक्ट्रो-कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स
दी माल-सोलन (हि.प्र.) 173212
फोन : 01792-222228, 226228, 98050-22028